(५)

२८ X १३½

अत्यंत दुष्प्राप्य

९५

श्रीकृष्णचन्द्र की शिवसंभावना

पत्र - ५

१९ वी शदी

कि मोरे पानी लागी प्रीति

M-101

ठाकुरकुं ज्ञरोगावेकेलिये॥ तापीछेमात्टचरनकेघरभावरीतिसौंपावधारतहैं॥ वेग्रू
हमंडनादिपूर्वक सिंहासनविछायभोगसामग्रीसिद्धकरिसमयप्रतीछाकरतहे॥ वेरवे
रसज्याकेनिकटजायनिर्भरनिद्रादेछिकिरिफिरिज्ञावतहैं॥ पाछेसूर्योदयहोतदेविवास
मेंनिद्रानिमिद्दुहैः॥ यहजानिजगावतहैं॥ मात्टचरनठाकुरकेवाललीलासंवंधिनाम
लेय॥ उठायकरिज्ञलकसवारिकपोलकूं विछातीलगायगोदलेयसिंहासनमात्टच
रनलेबयठतहे॥ तापाछेमात्टचरनकीसखीश्रीनंदजीकीभोग्यतेसवसामग्रीकोना
मलेयस्वादुकहिमनोहारिकरिज्ञरोगावतहै॥ समयसाफ्रव्यंजनादिकरतहेसखीजन १
तापाछेव्रजभक्तश्रीमुषदेविज्ञपनेघरिजायभावरीतिसौसवसामग्रीसमर्प्पिकेंफिरिमा

त्स्चरनके घरमंगलआरती देषनआवतहै ॥ कदाचितठाकुरजगायेनहीजगतनिमेषक
रितवे ॥ अथवाव्रजभक्तअपनेघरिजगावतहै ॥ तवप्रवोधपढिजगावतहैं ॥ तहागूढलीला
अनेकहै तेभावनाजननहीकों ॥ याकारणतेप्रवोधपढिबेकोअधिकारहै उनहीकोंहैंओ
रनकोंनही ॥ पाछेमात्स्चरनकीसषीआचमनीकरवायमुषवैस्त्रदेई मंगलार्त्तिकरत
हैं ॥ तदुपरांतिवेसषीजनतेलफुलेलऊवटनाचंदनजलसमोयसंग्यारसामग्रीआभर
नकीपेटिकासवसिद्धकरलेयमात्स्चरनसोंकहतहैं ॥ ठाकुकोंपधरावावेई ॥ तवमा
त्स्चरनठाकुरकोंपधरावतहै ॥ व्रजभक्तनसोंमिलिकैं ठाकुरबालभावकेआग्रहक
श्रीराधाजी रिमुख्यश्रीस्वामिनीकोंनिकटहीराषतहैं ॥ उनविनाठाकुरभोजनादिकछुकरवाय
जी

ब्रजसब आपनी आपनी सामग्री जो लाइ है सो बडा भक्तन के संग बे घडी अनेक परि हास्यादि
क करत आरोगत है ॥ पाछे आचमन करि बीडा आरोगि बैठत है ॥ इतने ही गोप सब अ
पने घर घर तें गोधन ले गो दोहन करि ग्वाल भोग की सामग्री सिद्ध करि संग गावे एवे त्र
ले सिद्ध होय ठाकुर कों बुलावन आवत है गोचारणार्थः ॥ तब प्रभु मात चरन पास आ
य पाग मागत है ॥ तब मात चरन आग पाद ई गोपन सों कहत है ॥ इनकी रछ्या करियो ये बा
लरिका है अके ले मति जान देहु ॥ ता पाछे ठाकुर गोपाल वेष करि सब न के संग आ
वत है ॥ पाछे बनिक में ठाकुर ग्वालन के साथ ग्वाल भोग कों दे आरोगत है ॥ पाछे वेनु
नाद करत गाय आगे दे पाछे गोपन के संग अनेक विध क्रीडा करत पाव धारत है

लेतनही। मातृचरन तिनकौं ठाकुर विषै निर्दोषभावजानतहै। लरिकाकी इनसौंसहज अक

प्रीतिहैं॥ तातैं ठाकुरके संग उनहूकौं श्रृंगारादिसव होतहै॥ पाछें ब्रजभक्त लेलेंगावतहै लीला

हाथसौं देषिजलसौं अन्हवावतहैं॥ सूक्ष्मकोमलवस्त्रसौं श्रीअंगपूंछिदोउ हेर श्रृंगार

करावतहै॥ ठाकुर लरिकांन विचिषेलिवेकौं। उछिभाजैं तातैं मेवा मिश्री श्रृंगारकरतपा

सिराषतहै॥ लडुवाश्री हस्तमैं लेवयठतहैं॥ उनकौं आभरनवस्त्रादिक अपनेभावतैं

पहिरावतहैं॥ गूढरीतिसौं॥ याभांति श्रृंगारकरिकस्तूरीकोतिलककरिवेनुठाकुरकेहा

थमैंदेतहैं॥ तवप्रभुवेनुनादकरतहैं॥ पाछेंआयकरि सिंहासनपरि ब्रजभक्तनके उत्त

वोढली रीयवस्त्रविछायवयठतहै॥ मुख्यश्री स्वामिनीजी सहित॥ व्रजभक्तनसहित॥ तापाछें

व्रजभक्तभावाविष्टहोयफिरतहैं घरिआयसवएकत्रवैठिसंध्यापर्यंत गुणगानकरतहैं ॥ ठाकुरकितनीकहूरिपधारतहैं ॥ इतनैंमात्चरनसवसामग्रीराजभोगकीसिद्धक आपुनधारीपरोसिश्रीनंदजूकी ॥ मात्चरन ठाकुरकेवुलावेकुंव्रजभक्तनकोंपठवतहैं ॥ तदनंतरप्रभुव्रजभक्तनकुंवुलावनकुंजानियाछेपावधारतहैं ॥ पाछेघरिआयपालनेवैठतहैसोवतहैं ॥ पछेमात्चरनवाव्रजभक्तफुलरावतहैं ॥ पाछेमात्चरनतथाव्रजभक्तजगावतहैं ॥ तहामिठाईमेवाआरोगिपाछेथारीपरोसीउपरिआयवयठतहैं ॥ सर्वअंगजहोकरतहै ॥ उठिउठिभाजतहै मनुहारिकरिकरिव्रजभक्तवामात्चरनवैठावतहैं ॥ यथाकिंचितभोजनकरिआचमनकरिवीडाश्रीनंदजू

केमुषमैंतैंचर्वितनांबूललेइफिरिफिरिनिकटहिम्बालरावतहैंगायनहैंतहांपाव्धारत
हैं॥अथव्राकवहूकमात्तचरनसवसामग्रीसिद्धिकरिएकवडोटोकरामैंधरिजोसाम
ग्रीजापात्रमैंउचितहोय्सोतामैंधरिराखिपछेगोपीजनवुलाय्तिनकौंवहुभांतिप
ढ्वतहै॥वेउएकांतसंगाआपकरतपाउधारतहैठाकुरकुंटेरतहैं॥तवठाकुरटेरसुन
तकेअकेलेदोरिउनकेनिकटआवतहैं॥आयकरिअनेकपरिहास्यादिककरि
उनपासतैंछाकलैश्रीदामगोपकेहाथदेतहै॥गोपनकौंगोवर्द्धनकेसिलापर॥पन
वारोसिद्धकरनपठवतहै॥आपुसांरहिउनकेअर्थसर्वपूर्णकरिपाछेपावुध
तहैं॥जायकरिग्वालनकेसंगिमध्यवैठिसवसामग्रीआरोगतहै॥अनेकविधि

गोवर्द्धनहरिदासवर्यप्रेरितपुलिंदितेफलमूलदधिभुंजिवेयोग्यदोउभांतिकेकंदयेसी
सामग्रीसिद्धिकरिलेई॥ कुंजद्वारिआयकरिठाकुरकेउठिवेकीप्रतिक्षाकरतहै॥ तव
सखीजनअनेकगीतवीनादिवाद्यकरिठाकुरकौंजगावतहै॥ पाछेपुलिंदिनकरिला
ईजेवस्तुतेअरोगतहैं॥ तापाछेप्रभुआलसघूर्णायमाननयनसखीजनकेहाथपरिहा
थदेय॥ यहभांतिगजराजगतिसौंगोपगोधनसमाजहैजहांतहांपाबधारतहैं॥ पीछेगोप
नसंगिविविधभांतिक्रीडाकरतगायनकौंचरावतचरावतदिनथोडोआयरहेतववेन
नादकरिपीतांवरफिराय॥ गोधनएकत्रकरिवनधातुमयूरपिछादिनकरिविचि तै
त्रितहोयगायआगैधरिवलिदेवजूगोपसवगावतनृत्यादिकरतसायंकालव्रज

स्पर्शी आदिक करत हे ॥ पाछे आरोगि जल पान करि तांबूल सिकार करि गोपनकौं गो चार
की आग्या दे करि आप संकेत स्थल पाव धारत हैं ॥ तहां श्री स्वामिनी जी की सखी
कुंज प्रदेस में सुंदर सज्या स्तरणादिक बिछावत तांबूल अन सुगंधादि वसन
पुष्पादि सकल सामग्री सिद्ध करि श्री स्वामिनी जी कौं पधराय कुंज द्वार वैठी
अपने अपने निकुंज गृह अवस्यात वर ठाकुर तहां पाव धारत हे ॥ वे सबी जन
सन्मुख आय करि पधराय ले जात हे ॥ जवै ठाकुर कुंज मैं प्रविष्ट होत हैं ॥ तव
आपु द्वारे वैठि गुन गान करत है ॥ पछे प्रभु अनेक भांति लीला सहित होय
कुंजन विषैं पोढत हैं ॥ ता पाछे जव पीछली दस घडी दिन रहत है तव श्री

वधारतहै॥अग्रीमल्लीलार्थ॥जबब्रजनिकटिआवतहै॥तबबलदेवब्रजबडेगो
पगायनकेसंगिआगेजातहै॥तेसमैंब्रजभक्तसर्वसंध्याभोगकीसामग्रीलेसन्मु
षआवतहै॥तहांउनकोकियोसबप्रकारकोसत्कारकरिअंगीकारकरि॥तापीछे
उनकोदिवसकोवियोगदुषदूरिकरतहै॥ब्रजपावधारतहै॥मध्यठाकुरवेनुना
दकरतकराछिनसौंभक्तनकौसन्मानकरतपावधारतहै॥तबगोषद्वारश्री
तचरनब्रजभक्तनसहितआरतीलेमार्गदेषतठाढीरहतहैं॥अतिआरति
सीसौंआवतमातचरनआरतीकरिबलयीयालेछातीसौंलगावतहैं॥
हश्रीकृष्णचंद्रकीदिवसभावनाजेपढैंतेश्रीराधाजीकृष्णजीकौंवश्यम

यारत
र॰म
प